कंचना कुमारी
अतिथि, शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

हिन्दी साहित्य के इतिहास में कालविभाजन, नामकरण

(1)

हिन्दी साहित्य के इतिहास — साहित्य के इतिहास का अध्ययन विविध समयों परिस्थितियों और प्रवृतियों के आधार पर किया जाता है इसलिए काल विभाजन की प्रक्रिया द्वारा प्रत्येक काल की सीमा का निर्धारण किया जाता है विभिन्न युगों में साहित्यिक प्रवृतियों की शुरूआत, उनका उतार-चढ़ाव उनकी सीमा का निर्धारण करती है परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि किसी काल विशेष में जो प्रवृतियाँ है वे एकदम खत्म हो जाती है या उनमे एकदम परिवर्तन आ जाता है काल विशेष में चलने वाली प्रवृतियाँ मुख्य धारण करने लगती है।

हिन्दी साहित्य के आरम्भकाल को स्थिर करने की समस्या सदा से रही है काल-सिमा-निर्धारण के लिए विषय में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है एक ओर जार्ज ग्रियर्सन मिश्रबंधु, रामकुमार वर्मा आदि इतिहासकार अपभ्रंश भाषा के उत्तरवर्ती रूप को हिन्दी का आदिम रूप मानकर उसकी शुरूआत संवत 700 से मानते हैं जार्ज ग्रियर्सन ने हिन्दी साहित्य का क्षेत्र भाषा की दृष्टि से निर्धारित किया जिसमे यह स्पष्ट किया गया कि हिन्दी साहित्य में न तो संस्कृत प्राकृत को और न ही अरबी फारसी मिश्रित उर्दू को सम्मलित किया जा सकता है

(2)

हिन्दी साहित्य के काल-विभाजन का सर्वप्रथम प्रयास जार्ज ग्रियर्सन कृत 'माडर्न वर्नाक्यूलर लिट्रेचर ऑफ हिन्दुस्तान' है उसके बाद चलकर मिश्रबन्धु ने मिश्र-बन्धु-विनोद में काल विभाजन का प्रयास किया है। जो इस प्रकार है

(1) आरम्भिक काल - (क) पूर्वारम्भिक काल (700-1343)
(ख) उत्तरारम्भिक काल (1344-1444)

(2) माध्यमिक काल - (क) पूर्व माध्यमिक काल (1445-1560)
(ख) प्रौढ़ माध्यमिक काल (1561-1680)

(3) अलंकृत काल - (क) पूर्व अलंकृत काल (1681-1790)
(ख) उत्तर अलंकृत काल (1791-1889)

(4) परिवर्तन काल (1990-1925)

(5) वर्तमान काल (1926 वि से अद्यावधि)

निःसंदेह मिश्रबन्धुओं का वर्गीकरण ग्रियर्सन की अपेक्षा प्रौढ़ है किन्तु इसमें भी असंगतियों का सर्वथा अभाव नहीं है सर्वप्रथम दोष तो यह है कि मिश्रबन्धुओं ने भी 700 से 1300 शती ई० को अपभ्रंश भाषा में निबद्ध साहित्य को हिन्दी की परिधि में समेट लिया।

(3)

अचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिंदीसाहित्य के हजार वर्षो के इतिहास को चार कालों में विभक्त किया है।

(1) आदिकाल (वीरगाथा काल 1050–1375)

(2) पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल 1375–1700)

(3) उत्तर मध्यकाल (रितिकाल 1700–1900)

(4) आधुनिक काल (गद्य काल (1900 से अब तक))

मिश्रबन्धों ने हमारे बिवेच्य काल को आदि काल के नाम से अभिहित किया किन्तु इस काल को अचार्य शुक्ल ने वीरगाथा काल कहा है। डॉ० रामकुमार वर्मा ने इस काल को संधि काल के नाम से भि अभिहित किया राहुल जी ने इस काल को सिद्ध सामन्त काल और हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे आदिकाल कहना युक्तिसंगत माना है। रचना प्रवृति के अधार पर शुक्ल जी इसे वीरगाथा काल कहा है विद्वानों की दृष्टि में ग्रन्थ संदिग्ध है अतएव अधिकांश विद्वान अब इस काल को आदिकाल ही मानते है।

डॉ० रामकुमार वर्मा ने हिन्दी साहित्य के आरंभिक काल को दो भागों में विभक्त कर उसका नामकरण संधिकाल और चरण

काल किया संधिकाल के अंतर्गत उन्होंने सिद्धों व जैन कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया है। चरण काल नाम वीरगाथाकाल की तरह रचित काव्यों का द्योतक है। डॉ० वर्मा ने एक ही कालखण्ड के दो नाम निश्चित किये है संधिकाल से दो भाषाओं - अपभ्रंश और हिन्दी की संधि का बोध होता है किसी एक कालखण्ड को दो नाम देना दो भिन्न कालों का ज्ञान करता है जिस सामग्री के आधार पर चरण काल नाम दिया गया है, वह सामग्री पर्याप्त व प्रामाणिक नहीं है.

राहुल सांकृत्यायन ने इस काल को सिद्ध सामंत काल कहा है और आठवीं से बारहवीं शताब्दी तक माना है

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी और डॉ० धीरेन्द्र वर्मा इस काल को अपभ्रंश काल कहते है.

अचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इस काल को आदिकाल कहना उचित समझते है

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इस काल को बीजवपन काल के नाम से पुकारा है।

(क) अचार्य शुक्ल ने हिन्दी के प्रारम्भिक (आदिकाल) की सीमाओं का निर्धारण 1050 वि० से 1375 वि० तक इसे वीरगाथा काल के नाम से अभिहित किया है

(ख) अचार्य शुक्ल ने पूर्व मध्यकाल को भक्तिकाल की संज्ञा से अभिहित किया

(5)

थे जो कि एक ही प्रवृति को सुचित करता है जबकी उस काल मे भक्ति धार के साथ-साथ साहित्य की अन्य धाराएं भी यथार्थ सक्रिय रही। शुक्ल जी ने भक्तिकाल की केवल चार काव्य परम्पराओ - निर्गुण ज्ञानाश्री ज्ञानश्रीय निर्गुण प्रेमाश्रयी, कृष्णभक्ति सबंधी परम्पराओ का उलेख किया।

(घ) परम्पराओ दृष्टिकोण के अनुसार प्राय: आधुनिक काल के साहित्य को विभिन्न युगो - भारतेन्दुयुग द्विवेदीयुग, छायावादी युग प्रगतिवादी युग, प्रयोगवाद युग मे विभक्त कर दिया जाता है।

उदाहरणार्थ आधुनिक काल के साहित्य को निम्नरूप काव्य परम्पराओ मे विभक्त किया जा सकता है।

(1) स्वच्छन्दतावादी काव्य परम्परा (छायावादी)
(2) समाजपरक यथार्थवादी काव्य परम्परा (प्रगतिवादी)
(3) व्यक्तिपरक यथार्थवादी काव्य परम्परा (प्रयोगवादी) आदि

इस प्रकार हम हिन्दी साहित्य का काल-विभाजन निम्नलिखित रूप मे कर सकते है

(1) प्रारंभिक काल (आदिकाल) 1241 - 1375
(2) पूर्वमध्य काल (भक्तिकाल) 1375 - 1700
(3) उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) 1700 - 1900
(4) आधुनिक काल — 1900 से अब तक

6

हिन्दी - साहित्य का आधुनिक - काल गद्यकाल के नाम से प्रतिष्ठित हुआ है आधुनिक काल की प्रमुख प्रवृत्ति गद्यात्मक रही है अनेक रूपो में गद्य - साहित्य विकसित और पल्लवित हो रहा है।

अचार्य शुक्ल द्वारा साहित्यक इतिहास - लेखन का प्रयास एक ऐसी नींव का पत्थर है जिसके बिना हिन्दी साहित्य के भव्य महल का निर्माण अकल्पनीय है।

5/5/2020

Scanned with CamScanner